

The Times of India- 05- November-2023

# T irrigation officials trash NDSA's Medigadda report

Koride.Mahesh@timesgroup.com

**Hyderabad:** A day after the National Dam Safety Authority's (NDSA) report on Medigadda barrage, Telangana irrigation officials said many of the observations and conclusions of NDSA were unsubstantiated or made without facts.

The irrigation officials said the designs were approved by the Central Water Commission (CWC) and agencies concerned and all manuals and codes were followed in toto while constructing the barrage.

"The Kaleshwaram project was approved by the technical advisory committee (TAC) of

the Jal Shakti ministry on June 6, 2018, after thoroughly examining all the aspects like hydrology, cost, irrigation planning, environmental clearances, etc. The design of the barrage was extensively studied by the costing directorate of CWC with respect to functionality and cost. The then chair-

## ► Related report P4

man of CWC, S Masood Husain, visited Kaleshwaram project and praised the project in 2018 during its execution," special chief secretary (irrigation) Rajat Kumar said in a letter to the Jal Shakti ministry on Saturday.

The irrigation officials reviewed para-wise observations of NDSA.

# T refutes NDSA Medigadda report, says rules followed

Says Expert Panel Did Not Visit 2 Barrages

Koride.Mahesh  
@timesgroup.com

**Hyderabad:** Defending the design of the Medigadda barrage, state irrigation officials on Saturday said all protocols were followed during construction. The remarks followed a report released by the National Dam Safety Authority (NDSA) on the barrage.

"The comments pertaining to Annaram and Sundilla barrages are unsubstantiated as the expert committee did not even visit the two barrages. We assure you that both the barrages are included in the list of specified dams under the Dam Safety Act and taking all the necessary measures to fully comply with the provisions of the Act," special chief secretary (irrigation) Rajat Kumar said.

Kumar said diversion structures such as barrages are subjected to multiplicity of loading conditions like the surface flows, sub-surface flows, uplift pressures, scours and exit gradients, tail water level, etc. These challenges individually and collectively were considered in design process for barrage in various combinations, he explained.

The Bureau of Indian Standards (BIS) published three codes, specifically meant for various aspects related to the design of barrages in addition to guidelines on various related aspects like cement, concrete, steel, etc., that were used in the construction of barrages.

The Central Board of Irrigation and Power manuals were also followed. The Central Design Organisation of Telangana, which is considered as a premiere institution in the country, has diligently followed the guidelines for all the projects, more specifically for Kaleshwaram, Kumar added.

Senior officials urged NDSA to cooperate with the state agencies in speedy restoration of the project without any extraneous considerations.



BJP state chief Kishan Reddy visits Medigadda on Saturday


## BARRAGE ENDURED 5 FLOODS, L&T TO RESTORE ITS BLOCK 7

- L&T to restore block 7 of Medigadda barrage where some piers sunk

- Says barrage constructed as per design provided by authorities in 2019

- Barrage has withstood five flood seasons



 The matter is under investigation and deliberation by competent authorities. L&T will take appropriate action to restore the damaged portion as soon as the competent authorities make a conclusion of remedial measures – L&T

The Hindu- 05- November-2023

# Contrast in water realisation

**T. Ramakrishnan**

**T**he crux of the Cauvery dispute can be best illustrated by the contrast in water realisation this year with that of the previous year. This year's southwest monsoon (June-September) saw Tamil Nadu realising a mere 10% of what it received during the corresponding period in 2022. In those four months last year, the State got around 452 thousand million cubic feet (tmc ft). This year, it was just 45 tmc ft.

October, the first month of the three-month northeast monsoon, saw a similar contrast. The State registered around 12.85 tmc ft last month as against nearly 121 tmc ft in October 2022. Till the end of October, the cumulative realisation was approximately 58 tmc ft. In a normal year, the State should have realised around 143.4 tmc ft. As the Cauvery catchments in Karnataka and Kerala are unlikely to have heavy rainfall in the coming months, the chances of a relatively higher realisation appear dim. Only many spells

of rain in the intermediate catchments (downstream of the Krishnaraja Sagar and Kabini dams in Karnataka and upstream of the Mettur reservoir) can change the situation.

When it became evident by the end of July and early August that the Cauvery catchments in Karnataka and Kerala had been recording low rainfall, the Cauvery Water Management Authority (CWMA), assisted by the Cauvery Water Regulation Committee, began to modify the water release schedule from mid-August by stipulating now and then the quantum of water to be released by Karnataka to Tamil Nadu. It is for the first time since it was established in June 2018 that the CWMA had to resort to the modification.

The present storage (around 19.7 tmc ft) in the Mettur dam is the outcome of the Water Resources Department's decision of suspending water release since October 11. Yet, the authorities were letting out a bare minimum quantum. The prospects of a bumper harvest of the samba crop look bleak this year.



**The Hindu- 05- November-2023**



## Decline in water availability in the Southern hemisphere

Driven in part by large-scale atmospheric climate modes, the Southern hemisphere accounts for more than 95% of the recent decline in global water availability, according to a new study. Global land water availability has varied due to climate change and increased human water use. The water availability across the Southern hemisphere decreased across the study period. In the Northern hemisphere, there is negligible change in land water availability.

Amar Ujala- 05- November-2023

# दुनिया के लिए क्यों जरूरी है जल विश्वविद्यालय

समूचा संसार लंबे समय से आशंकित है कि अगला विश्व युद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। यह आशंका निर्मूल भी नहीं है। इसका सबसे हालिया उदाहरण दक्षिण अफ्रीका है। ऐसे मुश्किल समय में दुनिया को भारत इस संकट से उबारने का मंत्र देने जा रहा है।

मुकुंद

**ज**ल संरक्षण आज समूची दुनिया के लिए अहम चिंत का विषय है। प्रकृति हमें लगातार वायु, जल, प्रकाश आदि शाश्वत गति से दे रही है लेकिन हम प्रकृति के इस नैसर्गिक संतुलन को बिगाड़ने से बाज नहीं आ रहे हैं। पानी को बचाने की दिशा में हमें पहले से चेत जाने की जरूरत है। आज हम जल पानी उचित प्रबंधन नहीं कर पाए तो भावी पीढ़ी पानी की एक-एक बूंद के लिए तरस जाएगी। नीति आयोग के समग्र जल प्रबंधन सूचकांक की रिपोर्ट में कहा गया है कि भारत के लगभग 600 मिलियन से अधिक लोग गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं। इसमें अंदेशा जताया गया है कि साल 2030 तक भारत में पानी की मांग उपलब्ध आपूर्ति की तुलना में दोगुनी हो जाएगी। इसके अलावा भारत में कृषि भूमि को भी जल संकट का सामना करना पड़ रहा है। यह संकट अकेले भारत का नहीं वैश्विक स्तर है।

इस साल (22,23,24 मार्च) न्यूयॉर्क में जल सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में संयुक्त राष्ट्रसंघ के महासचिव एंटोनियो गुटेरेस दुनिया को कड़वी हकीकत से रूबरू करा चुके हैं। उन्होंने कहा था कि पानी पर गंभीर खतरा मंडरा रहा है। हम प्राणिक तरीके से जीवनदायी जल का भयंकर दोहन कर रहे हैं। इस वजह से धरती का तापमान बढ़ रहा है। इससे वाष्पीकरण की प्रक्रिया तेज हो गई है। हमने जलचक्र को तोड़ दिया है। पारिस्थितिक तंत्र को नष्ट कर दिया है। भू-जल को दूषित कर दिया गया है। वैसे भी समूचा संसार लंबे समय आशंकित है कि अगला विश्वयुद्ध पानी के लिए लड़ा जाएगा। यह आशंका निर्मूल भी नहीं है। कई देशों में पानी का संकट गहरा भी गया है। इसका सबसे हालिया उदाहरण दक्षिण अफ्रीका है। इस देश की राजधानी केप टाउन गंभीर जल संकट का सामना करने को अभिशप्त है। ऐसे मुश्किल समय में दुनिया को भारत इस संकट से उबारने का मंत्र देने जा रहा है। भारत में दुनिया के पहले जल विश्वविद्यालय की परिकल्पना साकार होने जा रही है। देश के पहले जलयोद्धा के रूप में सम्मानित उमाशंकर पाण्डेय और भारतीय मूल के पर्यावरण वैज्ञानिक डॉ. रविकांत पाठक ने इस जल विश्वविद्यालय का पूरा प्रस्ताव सरकार के पास भेजा है। डॉ. पाठक लंबे समय से विदेश में जलवायु परिवर्तन पर काम कर रहे हैं। फिलहाल वह स्वीडन के गोथेनवर्ग विश्वविद्यालय में प्रोफेसर हैं। जलग्राम जखनी के पाण्डेय को उनके 'खेत पर मेड़ और मेड़ पर पेड़' अभियान के लिए केंद्र सरकार पद्मश्री देकर जल बचाओ अभियान को गांव-गांव पहुंचा चुकी है। पाठक का दावा है कि यह दुनिया का पहला जल विश्वविद्यालय होगा। उमाशंकर और डॉ. रविकांत के प्रयास से दुनिया के पहले जल विश्वविद्यालय के लिए पचास एकड़ जमीन दान पर मिल चुकी है।

प्रो. पाठक का कहना है कि संकट यह है कि आज भारत के अलावा दुनिया में अन्य किसी के पास जल के रहस्य, उसके गुण,



उसकी शक्ति और ज्ञान की जानकारी किसी के पास नहीं है। अभी तक पानी के बारे में संपूर्ण ज्ञान किसी के पास नहीं है। इसीलिए पूरी दुनिया में पानी का संकट मंडरा रहा है। पानी के बिना प्रकृति और मानव जीवन की कल्पना असंभव है। दुनिया में बिगड़ते पर्यावरण के कारण ही हम सब जलवायु परिवर्तन का सामना कर रहे हैं। प्रो. पाठक का दृढ़ मत है कि जल ही एकमात्र जीवन का आधार है। इसलिए पानी पर भी उच्च शिक्षा की व्यवस्था हो, यह जरूरी हो गया है। वह कहते हैं "सारे संसार में कृषि, कानून, संस्कृत, संगीत के अलावा अलग-अलग विषय केंद्रित विश्वविद्यालय तो हैं, पर कहीं भी जल विश्वविद्यालय नहीं है। उत्तर प्रदेश का बुंदेलखंड अकाल की विभीषिका और पिछड़ेपन के लिए लंबे समय तक जाना गया है। अब हालात बदले हैं। इस बदली छवि को और संवारने के लिए चित्रकूटधाम मंडल के हमीरपुर जिले में दुनिया का पहला विश्वविद्यालय खोलने का प्रस्ताव जिला अधिकारी हमीरपुर के माध्यम से उत्तर प्रदेश शासन को भेजा जा चुका है। इस विश्वविद्यालय का संचालन पाण्डेय करेंगे।"

'इस जल विश्वविद्यालय में नवीनतम और परंपरागत शिक्षा प्रदान करने के साथ सर्टिफिकेट, डिप्लोमा और डिग्री जैसे उच्च विषय रहेंगे। अगर किसी को जल बचाने में रुचि है तो उसके लिए विश्वविद्यालय के दरवाजे हमेशा खुले रहेंगे। ऐसे व्यक्ति को शिक्षक प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा। सरकार और यूजीसी के नियमों के तहत इस जलज्ञान मंदिर में पुरखों की जल बचाने और जल जोड़ने (संचयन) की बेजोड़ विधियों का व्यावहारिक अध्ययन किया जाएगा। साथ ही पौराणिक जल ज्ञान का प्रसाद प्रामाणिकता के साथ कोर्स में शामिल किया जाएगा। विश्वविद्यालय की कोशिश होगी सभी जीव-जंतु-पशु-पक्षियों का जीवन आसान हो। किसी को भी बूंद-बूंद के लिए तरसना न पड़े'-यह कहना है उमाशंकर पाण्डेय का। उन्होंने कहा कि दिसंबर में शिलान्यास होने की उम्मीद है।

इस विश्वविद्यालय की परिकल्पना पत्र में गंगा सिर्फ नदी नहीं है। वो मोक्षदायिनी हैं। वो मां हैं। पेड़ सिर्फ छाया देने वाले या लकड़ी देने वाले वृक्ष नहीं हैं। वो पिता और देवतुल्य हैं। जल का हर स्रोत देवतुल्य है। भारत को हर नदी शैलपुत्री है। इसलिए इस विश्वविद्यालय में गंगा के साथ सभी शैलपुत्रियों के प्रताप की गाथा पढ़ाई जाएगी। इस विश्वविद्यालय वाटर साईंस, वाटर इंजीनियरिंग ऐंड मैनेजमेंट, वाटर ऐंड हेल्थमनटीज, वाटर ऐंड स्पेस, वाटर ऐंड सोसाइटी और वाटर ऐंड नेचर पर वृहद शिक्षा दी जाएगी।



पर्यावरण पर्व